

2893

MS. A. 9. 2. 1. 3.

MS. A. 9. 2. 1. 3.

उभेन मय्युक्तं न

नाम॥ पञ्चमदिगलला॥ पुनश्च सत्कात्रिण बोद्धुं जलधननाम
महाविहात्रियं॥ पञ्चमदिगलला॥ इन्द्रगृहनिवसत॥ शिवजा
वाय्वकृता हव॥ शिवदवत्राज नाम्नाया॥ दात्रास्त्रितीजनसहिगस
सकत्रात्रिष्ठमन्त्रे॥ हुं हुं जन्मनिवापुर्वजन्मनीवा॥ उन्मजन्म
नृगेषु॥ सकलजन्मपाङ्क्ति॥ माहापातकादि॥ उपपातककृय
त्वं॥ गइल॥ हुं हुं जन्म शिवदवत्राजस्त्रिपुत्रवसहिगस॥ ज्ञायू
षात्रागधनेष्वप्यादि॥ गुरुरलसंप्राप्तिकामनार्थ॥ गृहलभत्रा

वो

गुजन्मसुलभे॥ आदिष्यादिनवग्रहजनि॥ सर्वत्रिष्ठपुसमन
कामनाया॥ यागिनीदध्मेयांश्च यागिनी॥ सर्वत्रिष्ठपुसमनका
मनाया॥ त्राज्वात्रादकाग्निउदकापुसमाल॥ रायापडवेनाशना
र्थ॥ धर्मार्थकाममाक्ष॥ वपुवर्गमिदीरुलप्राप्ति॥ काममर्थ॥ उथ
सामनार्थकागमने॥ सुथसमसुमान्यरुल॥ प्राप्ति कामनाया॥ अ
स्मिन्दिने॥ शिवदवत्राजस्त्रिपुत्रवसहिगस॥ शिवदवत्राजनाम्नाया॥ दात्रा



Handwritten blue ink markings, possibly a signature or initials.

2893	
ASHA ARCHIVES	

लितीज। लिपूत्रुषनामन॥ कृगनिवार्यन॥ अपथद्वत्रसफमिठु
 नसंयुक्तवठकेत्रिनामभत्रनि॥ अमदाय्यविलोकित्यवत्रस्यव
 ठाद्वत्रभगमहामानसु॥ अमदाय्यविलोकित्यवत्रस्यसुडाकोपु
 अमैत्रियपुगिज्ञानामसु॥ अमदाय्यविलोकित्यवत्रस्यसंधन
 सुडाकोपु॥ अकृत्रुषनामसु॥ अद्वद्वनामाशुसुयसुडा
 सुडादि॥ सुजयधर्मसुकात्रि॥ वडकिहनाममहाविज्ञाननि
 वसत॥ अवजाय्यकृत्रुषनाम॥ असिगडाठिनामस्य॥ साहसु

अद्वद्वनामसु॥ गगपुसुकदानंदाराग्यं॥ ददस्यवजा
 वाय्यअसिगडाठिस्य॥ महसंपदय॥ ॥ अद्वद्वनामसु
 विद्विहिनक्याहिन॥ एकहिनीनवदर्शन॥ पुन्यएवमुक्तसर्व॥ त्य
 ससादासुत्रवत्र॥ नजानकिगपूजा॥ कउबुआदयसुत्रा॥ नकाह
 किंकरीष्यामि॥ नजानहंगवार्यन॥ नजानहंत्यसुत्रपत्र॥ अत्रि
 जनवावागुन॥ नकम्यवाहंजानामि॥ एकित्ववत्रनवय॥ मामु
 किनिधिसंधय्य॥ नित्यपूजापुगुहय॥ तद्वमाइममिनाथ॥ ह

दत्तावताय हं ॥ अथ गार्धराह्यानि ॥ क्रियते हं नि सं मया ॥ दाता हं
मिमिर्मा मत्वा ॥ क मत्स्य पत्र म्य ष्वत्र ॥ आवाहनं न जानामि ॥ नैव
जानामि पूजनं ॥ ॐ नैविष्य नैवापि ॥ क मत्स्य पत्र म्य ष्वत्र ॥ यत्
न इत्तु नैवापि ॥ मया मूर्द्धनि जायते ॥ क मत्स्य पत्र म्य ष्वत्र ॥ यत्
दिमां प्राहिदहिनां ॥ क मत्स्य पत्र म्य ष्वत्र ॥ त्वं मत्स्य पत्र म्य ष्वत्र ॥ त
स्मात्कारुण्यं तावद्वन ॥ त्वं मत्स्य पत्र म्य ष्वत्र ॥ ॐ नमो तावत्स्य पत्र म्य ष्वत्र ॥
ॐ धनं कत्र एतेन ॥ क मत्स्य पत्र म्य ष्वत्र ॥ क मत्स्य पत्र म्य ष्वत्र ॥ निर्मल

ज्ञानधर्म ॥ विकसितमतिधन ॥ प्राफ संवाधियात्र ॥ सकत्र एव न
नो ॥ पातुवाशा लोकनाथ ॥ न जानामि दयता ऊक्ति पूरुषस्य ॥
यापसमस्तं प्रतिदद्यामि ॥ कायनवावामनसा कृते ॥ यत्स्य न्य
मनिमन्मदद्यामि ॥ दयवाधे पत्रिभमयामि ॥ तत्र प्रयम्ये
तमपुयामि ॥ कायवप्रिया ॥ प्रतिधुषयामि ॥ संवृद्धमार्गविसमा
धुयामि ॥ वादिसमग्रप्रनिधनविले ॥ न जानामि दयता ऊस्य
क मत्स्य पत्र म्य ष्वत्र ॥ क मत्स्य पत्र म्य ष्वत्र ॥ क मत्स्य पत्र म्य ष्वत्र ॥

ॐ श्री गुरुः ॥ सम्यग १०२६ ॥ निमित्तं कुरु कुरु ॥ गुणदत्तः ॥ मंगलवा
नः ॥ ॐ कुरु कुरु सूर्यवाहा लया ॥ अथ गंधमैतवानकः ॥ श्री देवराजक
उं गुरु नः ॥ उं वाहा लया ॥ श्री सिंगजी विगु लया गदा न वि
या गुरु लः ॥ ॐ गुणं न्य नं जगत्संसार उज्ज्वल इयमालः ॥ दानपति या
सा गुरु सफु वृद्धि पूरु इयमालः ॥ ॐ ॥ शुभं नमस्तु श्री सत्यहि
पूत इया उं ॥ यत्र गुणमोद गति लाठा उं ॥ इति निवात्र न इया
उं ॥ त्रयाय नमः ॥ ॐ ॥ चत्वारं साक्षिः ॥ लिता हवे ॥